छत्तीसगढ़ी लोककथाएँ भारतीय संस्कृति का सार हैं: महेंद्र मिश्र

अखिल भारतीय जनजातीय लेखक सम्मेलन का आयोजन

अमृत संदेश । रायपुर

साहित्य अकादमी नई दिल्ली के अध्यक्ष माधव कौशिक ने कहा कि साहित्य अकादमी का कार्य साहित्यकारों को समाज के विषय में लेखन करने के लिए जगाना है। जनजातीय बोलियों में वाचिक परंपराओं में संरक्षित संस्कृति को लिखने की आवश्यकता है। उन्होंने रायपुर में आयोजित दो दिवसीय अखिल भारतीय जनजातीय लेखक सम्मेलन के उद्घाटन समारोह में देश भर के आए जनजाति विषयों के लेखकों को संबोधित किया। श्री कौशिक ने कहा, औपनिवेशिक काल में भारत की भाषा, संस्कृति, परंपराओं को

लेकर हमारे मन में हीनभावना भरी गई, इस कारण अपनी बोली और भाषा पर हमें आज भी गौरव नहीं है।

मुख्यअतिथि की आसंदी से बोलते हुए साहित्य अकादमी छत्तीसगढ़ के अध्यक्ष शशांक शर्मा ने कहा कि इस आयोजन में देश भर के जनजाति लेखक जुटे हैं इस सम्मेलन में छत्तीसगढ़ के भी जनजाति बोली और भाषा के लेखकों को शामिल किया गया है। इस सम्मेलन के माध्यम से परस्पर जनजाति भाषाओं और संस्कृतियों का प्रसार होगा। उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ में ग्राम्य और अरण्य संस्कृति और परम्परा के मूल तत्व एक हैं, अलग अलग भाषा में व्यक्त होने के कारण समझ बदल जाती है। इन वाचिक परंपराओं को लिखने से एक दूसरे समाज के प्रति समझ बढ़ेगी और एकात्म का भाव जागेगा। बीज वक्तव्य रखते हुए महेंद्र मिश्र ने कहा, आदिवासी लोकगीत और साहित्य स्वदेशी ज्ञान, सांस्कृतिक पहचान और पर्यावरणीय ज्ञान का एक जीवंत और गतिशील संग्रह है। छत्तीसगढ़ में, गोंड, भतरा, बैगा, उरांव, हलबा, दुरुआ, पंडो, पहाड़ी कोरवा और कमार जैसे विविध आदिवासी समुदायों के साथ, ये परंपराएँ स्थानीय विरासत को संरक्षित करने में एक आधारभूत भूमिका निभाती हैं। यह शोधपत्र भाषाई विविधता, पारिस्थितिक अंतर्दृष्टि, सामाजिक मूल्यों और राजनीतिक एजेंसी को बनाए रखने में आदिवासी लोकगीतों के महत्व की खोज करता है। यह पुस्तक लुप्तप्राय भाषाओं के संरक्षण और सांस्कृतिक स्मृति को बनाए रखने में आदिवासी साहित्य की भूमिका की जांच करती है, साथ ही इस महत्वपूर्ण कार्य में लगे वि द्वानों और संस्थानों के योगदान पर प्रकाश डालती है।

भारत के आदिवासी समुदाय सांस्कृतिक, भाषाई और पारिस्थितिक ज्ञान के विशाल भंडार का प्रतिनिधित्व करते हैं। इनमें से अधिकांश मौखिक परंपराओं में निहित हैं जो पीढ़ियों से चली आ रही हैं।